

# भारतीय ज्ञान पर आधारित आधुनिक प्रबंधन



उद्योग व व्यापार जगत ने पाया है कि शीर्ष नेतृत्व को न केवल व्यावसायिक प्रबंधन बल्कि नैतिक मूल्यों का भी पालन करना चाहिए ताकि वे अपने उद्यमों का प्रभावी नेतृत्व कर सकें। अपने आध्यात्मिक समझ में सुधार करना अब एक व्यावसायिक आवश्यकता है, और आने वाले दशकों में और भी अधिक हो जाएगी।

भारतीय शास्त्र और ऋषि इस क्षेत्र के सभी स्तरों के प्रबंधकों के लिए एक तैयार खाका प्रदान करते हैं। आज की आधुनिक दुनिया में, हर कदम आधुनिक प्रबंधकीय नियमों द्वारा निर्देशित होता है। प्रबंधन वह है जो सभी विषयों का मार्गदर्शन करता है, चाहे वह वित्त और बैंकिंग, कॉर्पोरेट क्षेत्र, विनिर्माण उद्योग, सैन्य और कृषि, विशाल अभियांत्रिकी क्षेत्र या स्वास्थ्य सेवाएं हों। हम देख रहे हैं कि कैसे खराब प्रबंधन प्रथाओं ने पूरी दुनिया में अराजकता पैदा कर दी है। यह लेख वैदिक और अन्य शास्त्रों में उन समस्याओं के संभावित समाधान खोजने के लिए हमारी समृद्ध विरासत में झांकने का एक प्रयास है, जो आधुनिक मनुष्य अपने प्रबंधकीय कार्यों को करते वक्त सामना करता है।

भगवद गीता दृष्टि, नेतृत्व, प्रेरणा, कार्य में उत्कृष्टता, लक्ष्यों को प्राप्त करने, कार्य को दिशापूर्ण बनाने, निर्णय लेने और योजना बनाने की आधुनिक (पश्चिमी) प्रबंधन अवधारणाओं पर चर्चा करती है। लेकिन दोनों में एक महत्वपूर्ण अंतर है। जबकि पश्चिमी प्रबंधन के विचार अक्सर भौतिक, बाहरी और परिधीय स्तरों पर मुद्दों को संबोधित करते हैं, भगवद गीता मानवीय सोच के बुनियादी स्तर पर मुद्दों को संबोधित करती है। जब मनुष्य की बुनियादी सोच में सुधार होता है, तो उसके कार्यों की गुणवत्ता और उनके परिणामों में स्वतः सुधार होता है।

पश्चिमी प्रबंधन दर्शन भौतिकवाद के आकर्षण और लाभ के लिए एक सतत प्रयास पर आधारित है, साधनों की गुणवत्ता की परवाह किए बिना लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उपयोग में लाये जाते हैं। यह सोच पश्चिम की प्रचुर संपत्ति से उपजी है, और इसके परिणामस्वरूप, 'भौतिकवाद द्वारा प्रबंधन' ने भारत सहित दुनिया भर के सभी देशों के सोच को बदल दिया है। हमारा देश, भारत, इन विचारों को आयात करने में सबसे आगे रहा है, इसकी वजह औपनिवेशिक शासकों द्वारा सदियों की गलत शिक्षा के कारण, जिन्होंने हमें यह विश्वास दिलाया कि पश्चिमी विचार और कार्यही श्रेष्ठ है और भारतीय विचारधारा, ज्ञान, कार्य निम्न है। नतीजतन, आधुनिक प्रबंधन शिक्षा के मंदिरों के निर्माण में बड़ी मात्रा में निवेश किए जाने के बावजूद, जीवन की सामान्य गुणवत्ता में कोई स्पष्ट परिवर्तन दिखाई नहीं दे रहा है, इस तथ्य के बावजूद कि कुछ लोगों के जीवन स्तर में वृद्धि हुई है। अर्थव्यवस्था के लगभग हर क्षेत्र

में वही संघर्ष, संस्थाओं का अपराधीकरण, सामाजिक हिंसा, शोषण और अन्य बुराइयां समाज के भीतर गहरे दिखाई दे रही है।

पहला प्रबंधन विज्ञान पाठ सदसदःविवेक बुद्धि से निर्णय लेना और दुर्लभ संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करना है। महाभारत में, दुर्योधन ने महाभारत युद्ध से पहले सहायता के लिए भगवान श्रीकृष्ण की बड़ी सेना को चुना, जबकि अर्जुन ने सहायता के लिए भगवान श्रीकृष्ण को चुना। यह प्रकरण एक प्रभावी प्रबंधक की प्रकृति के बारे में कुछ बताता है : दुर्योधन ने संख्याओं को चुना, जबकि अर्जुन ने ज्ञान और कौशल्य को चुना।

गीता के पहले अध्याय में अर्जुन की निराशा समझ में आती है। श्रीकृष्ण ने अर्जुन के मन को जड़ता से नैतिक कार्य करने के लिए बदल दिया। जब अर्जुन अपने अवसाद से उबरे और युद्ध के लिए तैयार हुए, तो श्रीकृष्ण ने उन्हें याद दिलाया कि उनकी तीव्र कार्रवाई की नई भावना अपने स्वयं के लाभ के लिए नहीं थी, न कि अपने स्वयं के लालच और इच्छा को संतुष्ट करने के लिए, बल्कि कई लोगों की भलाई के लिए, परम में विश्वास के साथ, अनैतिक कार्यों पर नैतिकता की जीत और असत्य पर सत्य की जीत।

आत्मा की चिरस्थायी प्रकृति कृष्ण द्वारा भगवद-गीता में व्यक्त की गई मूलभूत अवधारणाओं में से एक है। आधुनिक प्रबंधन साहित्य में भी आत्मा की अवधारणा जोर पकड़ रही है। स्टीफन कोवी पेशेवरों को अपनी एक किताब में उनकी “आंतरिक आवाज” सुनने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वह पूर्ण व्यक्तित्व प्रतिमान का प्रस्ताव करते समय एक व्यक्ति के चार आयामों को संदर्भित करते हैं : आत्मा, शरीर, हृदय और मन।

श्री कृष्ण ने दो प्रकार की कार्य संस्कृतियों का उल्लेख किया है जिन्हें संगठन में लागू किया जा सकता है।

दैवी संपत्त : यह एक दिव्य कार्य संस्कृति बनाता है जिसमें धर्म (नैतिक कार्यों) को प्राथमिकता दी जाती है और गतिविधियों को सही तरीके से किया जाता है। उपरोक्त उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए एक दैवीय कार्य संस्कृति बनाना आदर्श है। यह कार्य संस्कृति साथियों के बीच आत्म-नियंत्रण, निडरता, त्याग, प्रत्यक्षता और पारदर्शिता को बढ़ावा देती है।

असुरी संपत्त : यह एक राक्षसी कार्यस्थल संस्कृति है जो अहंकार, व्यक्तिगत इच्छाओं और खराब प्रदर्शन की विशेषता है। ऐसी कार्य संस्कृति में धर्म की कमी के कारण सही उद्देश्यों को पूरा करना मुश्किल हो जाता है।

अर्थशास्त्र: यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि कौटिल्य, एक जटिल संगठन बुनने के बाद, नीतियों और प्रक्रियाओं, यानी व्यावसायिक प्रक्रियाओं को स्थापित करने के लिए आगे बढ़ते हैं। अर्थशास्त्र में समाज, व्यक्तिगत उद्योगों, श्रम और रोजगार, प्राकृतिक आपदाओं और उप-नियंत्रण के लिए विस्तृत नीतियां हैं। इस बिंदु पर, वह प्रभावी और कुशल व्यावसायिक प्रक्रिया कार्यान्वयन के प्रमुख घटक, अर्थात् प्रबंधन के मानवीय पहलू के अपने ज्ञान की व्यापकता को प्रदर्शित करता है। उनका मानना है कि राज्य एक आर्थिक लक्ष्य वाला एक सामाजिक संगठन है। फिर से, पीटर ड्रकर और कौटिल्य यहां

तालमेल बिठाते दिखते हैं, क्योंकि ड़कर एक संगठन को “सामाजिक आयाम के साथ-साथ एक आर्थिक उद्देश्य” के रूप में परिभाषित करता है। इस बिंदु पर, कौटिल्य अपने स्वामी को याद दिलाते हैं कि राज्य तंत्र को प्रभावी ढंग से, कुशलतापूर्वक और ईमानदारी से कार्य करने के लिए जटिल मानव प्रकृति की गहन समझ की आवश्यकता है। वह दो अवांछनीय मानव स्वभाव के दृष्टिकोणों की तलाश करने और उनसे बचने की चेतावनी देते हैं : प्रमादा, जिसका अर्थ है अधिकता, और अलास्या, जिसका अर्थ है निष्क्रियता। कौटिल्य के अनुसार, यह वह जगह है जहाँ नेतृत्व महत्वपूर्ण है।

ईसा से पहले चौथी शताब्दी में लिखी गई अर्थशास्त्र, 24 शताब्दियों के बाद भी प्रासंगिक बनी हुई है। अर्थशास्त्र अपने गौरवशाली अतीत में भारत की बौद्धिक पूंजी का प्रमाण है। हमारे पास अतीत की परंपरा है। हमें भविष्य के लिए बौद्धिक पूंजी को पुनर्जीवित करने और फिर से बनाने की मानसिकता की आवश्यकता है।

हमारे प्राचीन भारतीय ग्रंथ, जिसमें अर्थशास्त्र के अलावा वेद, उपनिषद, भगवद गीता, रामायण और महाभारत शामिल हैं, की गहन जांच से एक वास्तविक ज्ञान के खजाने का पता चलता है। इस खजाने में सर्वोत्तम दिशानिर्देश हैं कि कैसे मनुष्य से अपने परिवार, समाज और सहकर्मियों के प्रति व्यवहार करने की अपेक्षा की जाती है।

हिंदू ग्रंथ ज्ञान का एक निकाय है जो व्यक्तियों को “परम सत्य” की दिव्य प्रकृति को समझने और आत्म-साक्षात्कार के लिए एक व्यक्तिगत मार्ग को तयार करने में सहायता करता है। वे पूरी तरह से आध्यात्मिक ज्ञान हैं जो हमारे आसपास के लौकिक ब्रह्मांड और प्रकृति से कई उपमाओं के माध्यम से आध्यात्मिक अवधारणाओं की व्याख्या करते हैं। भारतीय शास्त्रों में विज्ञान, अध्यात्म, मनोविज्ञान और प्रबंधन के क्षेत्र में ज्ञान का खजाना है। एक व्यक्ति की भलाई और कार्यों का पूरे संगठन के परिणाम पर प्रभाव पड़ सकता है। आत्म-साक्षात्कार का मार्ग एक “खोज” है जिसमें “अभ्यास” शामिल हैं जो व्यवस्थित रूप से मन को मजबूत करते हैं, चरित्र को आकार देते हैं, और व्यवहार को आकार देते हैं ताकि मनुष्य अपने स्वयं के निर्णय ले सकें कि कैसे खुश, उत्पादक जीवन जीना है और प्रकृति का संरक्षण भी शामिल है।

(लेखक विभिन्न सामाजिक व राष्ट्रीय विषयों पर लिखते हैं व इनकी कई पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं)

संपर्क 7875212161